Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका – एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. ज्योति सिंह*

* अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – पारिवारिक संसाधन प्रबंधन किसी भी समाज की सामाजिक–आर्थिक संरचना को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका पारंपरिक रूप से घरेलू सीमाओं तक सीमित मानी जाती रही है, किंतु आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों के साथ महिलाओं की भूमिका पारिवारिक संसाधनों के नियोजन, संगठन, उपयोग और संरक्षण में अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। यह शोध पत्र महिलाओं की पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में भूमिका का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि महिलाएँ किस प्रकार समय, धन, ऊर्जा एवं मानव संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन करती हैं तथा सामाजिक–आर्थिक कारक उनकी भूमिका को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन मध्यप्रदेश के सतना जिले की ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं पर आधारित है। सर्वेक्षण विधि द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण तालिकाओं के माध्यम से किया गया। शोध परिणाम दर्शाते हैं कि महिलाएँ संसाधन प्रबंधन में दक्ष हैं, परंतु शिक्षा, आय, सामाजिक मान्यताएँ एवं निर्णय–निर्माण में सीमित सहभागिता उनकी पूर्ण क्षमता के उपयोग में बाधक हैं।

शब्द कुंजी – पारिवारिक संसाधन, गृह प्रबंधन, महिलाएँ, समाजशास्त्रीय अध्ययन।

प्रस्तावना – परिवार समाज की सबसे छोटी किंतु सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। परिवार का संतुलित एवं सुचारु संचालन पारिवारिक संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन पर निर्भर करता है। संसाधन सीमित होते हैं, जबकि आवश्यकताएँ असीमित होती हैं। ऐसी स्थिति में संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग परिवार की स्थिरता, सुरक्षा और प्रगति के लिए अनिवार्य हो जाता है। पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में समय, धन, ऊर्जा, ज्ञान, कौशल एवं भौतिक संसाधनों का समुचित नियोजन एवं उपयोग शामिल होता है।

भारतीय समाज में महिलाओं को परंपरागत रूप से गृहिणी की भूमिका में देखा गया है। किंतु वास्तविकता यह है कि महिलाएँ परिवार की अर्थव्यवस्था, सामाजिक संतुलन एवं भावनात्मक स्थिरता की धुरी होती हैं। वे न केवल घरेलू कार्यों का प्रबंधन करती हैं, बल्कि परिवार की आय का नियोजन, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल एवं सामाजिक संबंधों का भी संचालन करती हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से महिलाओं की यह भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भूमिका सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मान्यताओं एवं लैंगिक विभाजन से प्रभावित होती है।

आधुनिक युग में शिक्षा, शहरीकरण एवं आर्थिक परिवर्तनों के कारण महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन आया है। महिलाएँ अब केवल घरेलू प्रबंधन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आर्थिक निर्णय–निर्माण एवं संसाधन नियोजन में भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। इसके बावजूद अनेक सामाजिक बाधाएँ आज भी महिलाओं की भूमिका को सीमित करती हैं। इसी पृष्ठभूमि में पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य – भारतीय परिवारों में संसाधनों की उपलब्धता एवं उपयोग में व्यापक असमानता पाई जाती है। महिलाओं की भूमिका को अक्सर अदृश्य श्रम के रूप में देखा जाता है, जिसका आर्थिक मूल्यांकन नहीं किया जाता। यह अध्ययन महिलाओं के योगदान को पहचान दिलाने तथा उनके संसाधन प्रबंधन कौशल को उजागर करने के लिए आवश्यक है।

यह शोध इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि–

1. यह महिलाओं के अदृश्य श्रम को समाजशास्त्रीय मान्यता प्रदान करता है।
2. यह पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में लैंगिक असमानताओं को उजागर करता है।
3. यह नीति–निर्माताओं को महिला–केंद्रित योजनाएँ बनाने में सहायता प्रदान करता है।
4. यह गृह विज्ञान एवं समाजशास्त्र के क्षेत्र में अकादमिक योगदान देता है।

पूर्व शोध समीक्षा – पूर्व शोधों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं की भूमिका पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में महत्वपूर्ण रही है, किंतु समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से क्षेत्रीय अध्ययन सीमित हैं।

शर्मा (2017) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि भारतीय परिवारों में बजट निर्माण एवं ठ नियंत्रण में महिलाओं की भूमिका केंद्रीय होती है। समय प्रबंधन में महिलाएँ बहु–कार्य क्षमता के कारण अधिक दक्ष होती हैं।

कुमार एवं सिंह (2019) ने ग्रामीण महिलाओं के संसाधन प्रबंधन पर अध्ययन करते हुए पाया कि संसाधनों की कमी के बावजूद महिलाएँ पारिवारिक आवश्यकताओं को संतुलित करती हैं। **पटेल (2020)** ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा महिलाओं की निर्णय–निर्माण क्षमता को सुदृढ़ बनाती है।

देवी (2021) के अध्ययन में यह निष्कर्ष सामने आया कि कार्यरत महिलाएँ पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में अधिक आत्मनिर्भर होती हैं। पूर्व अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है, किंतु सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ उनके पूर्ण योगदान को सीमित करती हैं। यह शोध इन्हीं पहलुओं का गहन विश्लेषण करता है।

शोध के उद्देश्य – इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
2. संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की दक्षता का विश्लेषण करना।
3. सामाजिक-आर्थिक कारकों का महिलाओं की भूमिका पर प्रभाव जानना।
4. ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के संसाधन प्रबंधन में अंतर का अध्ययन करना।
5. महिलाओं की निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में सहभागिता का मूल्यांकन करना।

शोध परिकल्पनाएँ:

1. महिलाएँ पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
2. शिक्षा का स्तर बढ़ने से महिलाओं की संसाधन प्रबंधन क्षमता में वृद्धि होती है।
3. शहरी महिलाएँ ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा अधिक संसाधन-सजग होती हैं।
4. कार्यरत महिलाओं की निर्णय-निर्माण क्षमता अधिक होती है।

शोध प्रविधि – किसी भी समाजशास्त्रीय अध्ययन की वैज्ञानिकता एवं प्रामाणिकता शोध प्रविधि पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध में पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करने हेतु सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन का स्वरूप वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है, क्योंकि इसमें महिलाओं की भूमिका का विवरणात्मक अध्ययन करने के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों का विश्लेषण भी किया गया है।

शोध का प्रकार – यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। वर्णनात्मक इसलिए क्योंकि इसमें महिलाओं की पारिवारिक संसाधन प्रबंधन संबंधी गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है, तथा विश्लेषणात्मक इसलिए क्योंकि आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गए हैं।

शोध विधि – प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि (Survey method) का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि समाजशास्त्रीय अध्ययनों के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है, क्योंकि इसके माध्यम से बड़ी संख्या में उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

अध्ययन की इकाई – इस शोध की अध्ययन इकाई विवाहित महिलाएँ हैं, जो किसी न किसी रूप में पारिवारिक संसाधन प्रबंधन से जुड़ी हुई हैं।

न्यादर्श चयन विधि – नमूना चयन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि के अंतर्गत उन महिलाओं का चयन किया गया जो पारिवारिक निर्णय-निर्माण एवं संसाधन प्रबंधन में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

न्यादर्श आकार – इस अध्ययन में कुल 100 महिलाओं को नमूने के रूप में चयनित किया गया, जिनमें-

- 50 ग्रामीण महिलाएँ
- 50 शहरी महिलाएँ

डेटा संग्रह के उपकरण – प्रदत्त संग्रह के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया-

1. संरचित प्रश्नावली
2. व्यक्तिगत साक्षात्कार

प्रश्नावली में बहुविकल्पीय, बंद एवं खुले प्रकार के प्रश्न सम्मिलित किए गए।

प्रदत्त विश्लेषण की विधि – संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि एवं तालिकीय प्रस्तुतीकरण के माध्यम से किया गया। सरल सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर निष्कर्ष निकाले गए।

अध्ययन क्षेत्र – प्रस्तुत अध्ययन के लिए मध्यप्रदेश के सतना जिले का चयन किया गया। सतना जिला भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से विविधताओं से परिपूर्ण है। यहाँ ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार की जनसंख्या निवास करती है, जिससे अध्ययन के लिए उपयुक्त तुलनात्मक आधार प्राप्त होता है।

सतना जिले में पारंपरिक एवं आधुनिक पारिवारिक संरचनाएँ एक साथ देखने को मिलती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में संयुक्त परिवार प्रणाली अभी भी प्रचलित है, जबकि शहरी क्षेत्रों में एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है। इस सामाजिक विविधता के कारण महिलाओं की भूमिका एवं संसाधन प्रबंधन की शैली में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। जिले की महिलाओं में शिक्षा स्तर, रोजगार की स्थिति, आय एवं सामाजिक जागरूकता में विविधता पाई जाती है। यही विविधताएँ इस शोध को समाजशास्त्रीय दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण बनाती हैं।

सामाजिक-आर्थिक प्रोफाइल

तालिका – 1: उत्तरदाताओं का आयु वर्ग वितरण

क्रं.	आयु वर्ग (वर्ष)	संख्या	प्रतिशत
1	20-30	22	22 %
2	31-40	38	38 %
3	41-50	27	27 %
4	51 एवं अधिक	13	13 %
5	कुल	100	100 %

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता 31-40 वर्ष आयु वर्ग की हैं। यह आयु वर्ग पारिवारिक जिम्मेदारियों एवं संसाधन प्रबंधन के दृष्टिकोण से अत्यंत सक्रिय माना जाता है।

तालिका – 2: शैक्षिक स्थिति

क्रं.	शिक्षा स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	निरक्षर	18	18 %
2	प्राथमिक	25	25 %
3	माध्यमिक	30	30 %
4	उच्च शिक्षा	27	27 %

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 30 % महिलाएँ माध्यमिक शिक्षा प्राप्त हैं, जबकि 27 % महिलाएँ उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। शिक्षा का स्तर महिलाओं की निर्णय-क्षमता एवं संसाधन प्रबंधन दक्षता को प्रभावित करता है।

तालिका – 3: रोजगार की स्थिति

क्रं.	रोजगार स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	गृहिणी	55	55 %
2	कार्यरत	45	45 %

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से पता चलता है कि अधिकांश महिलाएँ गृहिणी हैं, किंतु 45 % महिलाएँ कार्यरत भी हैं, जो पारिवारिक आय में योगदान देती हैं।

पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका

तालिका –4: पारिवारिक बजट निर्माण में भूमिका

क्रं.	भूमिका का स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	पूर्ण भूमिका	62	62 %
2	आंशिक भूमिका	28	28 %
3	कोई भूमिका नहीं	10	10 %

उपरोक्त तालिका से यह परिलक्षित होता है कि 62 % महिलाएँ पारिवारिक बजट निर्माण में पूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह दर्शाता है कि आर्थिक निर्णय–निर्माण में महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय है।

तालिका – 5समय प्रबंधन में महिलाओं की दक्षता

क्रं.	दक्षता स्तर	प्रतिशत
1	उच्च	57 %
2	मध्यम	33 %
3	निम्न	10 %

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 57 % महिलाओं की समय प्रबंधन दक्षता उच्च पाई गई। महिलाएँ घरेलू कार्य, बच्चों की देखभाल एवं आर्थिक गतिविधियों के बीच संतुलन बनाती हैं।

तालिका – 6: निर्णय–निर्माण में सहभागिता

क्रं.	सहभागिता स्तर	प्रतिशत
1	उच्च	48 %
2	मध्यम	37 %
3	निम्न	15 %

उपरोक्त तालिका से यह पता चलता है कि लगभग आधी महिलाएँ पारिवारिक निर्णय–निर्माण में सक्रिय रूप से शामिल हैं, जो महिलाओं की बढ़ती सामाजिक स्थिति को दर्शाता है।

पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका

समाजशास्त्रीय विश्लेषण समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से पारिवारिक संसाधन प्रबंधन केवल आर्थिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मान्यताओं, लैंगिक भूमिकाओं एवं शक्ति संबंधों से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारतीय समाज में महिलाओं को पारंपरिक रूप से गृह कार्यों की जिम्मेदारी सौंपी गई है, किंतु इन गृह कार्यों के अंतर्गत संसाधन नियोजन, संगठन एवं नियंत्रण की जटिल प्रक्रियाएँ निहित होती हैं।

महिलाएँ परिवार की दैनिक आवश्यकताओं – भोजन, वस्त्र, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सामाजिक गतिविधियों के लिए संसाधनों का प्राथमिक नियोजन करती हैं। सीमित आय एवं बढ़ती आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाना महिलाओं के संसाधन प्रबंधन कौशल का परिचायक है। समाजशास्त्रीय रूप से यह स्थिति महिलाओं की कार्यात्मक भूमिका को दर्शाती है, जो परिवार की स्थिरता बनाए रखने में सहायक होती है।

समय संसाधन का प्रबंधन – समय महिलाओं का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है। महिलाएँ घरेलू कार्य, बच्चों की देखभाल, वृद्धजनों की सेवा तथा कई मामलों में बाह्य रोजगार को भी संतुलित करती हैं। यह बहु–कार्य क्षमता महिलाओं को प्रभावी समय प्रबंधक बनाती है। ग्रामीण महिलाओं में समय प्रबंधन अधिक श्रमसाध्य होता है, जबकि शहरी महिलाएँ तकनीकी साधनों के माध्यम से समय की बचत करती हैं।

आर्थिक संसाधनों का प्रबंधन – आर्थिक संसाधनों के प्रबंधन में महिलाएँ परिवार की आय, व्यय एवं बचत के बीच संतुलन बनाती हैं। महिलाएँ प्राथमिक आवश्यकताओं को प्राथमिकता देती हैं, जिससे पारिवारिक स्थिरता बनी रहती है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह भूमिका महिलाओं की आर्थिक तर्कशीलता को दर्शाती है।

ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका – 7: ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में बजट प्रबंधन

क्रं.	क्षेत्र	उच्च दक्षता	मध्यम	निम्न
1	ग्रामीण	42	38	20
2	शहरी	65	25	10

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह पता चलता है कि शहरी महिलाओं में बजट प्रबंधन दक्षता अधिक पाई गई, जिसका प्रमुख कारण शिक्षा एवं सूचना तक बेहतर पहुँच है।

तालिका – 8: निर्णय–निर्माण में सहभागिता (ग्रामीण बनाम शहरी)

क्रं.	क्षेत्र	उच्च	मध्यम	निम्न
1	ग्रामीण	35	40	25
2	शहरी	60	30	10

उपरोक्त तालिका से परिलक्षित होता है कि शहरी महिलाओं की निर्णय–निर्माण में सहभागिता अधिक है, जो बदलती सामाजिक संरचना को दर्शाती है।

सामाजिक–आर्थिक कारकों का प्रभाव – महिलाओं की पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में भूमिका अनेक सामाजिक–आर्थिक कारकों से प्रभावित होती हैरू

1. **शिक्षा** – शिक्षा महिलाओं की जागरूकता एवं निर्णय क्षमता को बढ़ाती है।
2. **आय स्तर –** उच्च आय वाले परिवारों में महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है।
3. **सामाजिक मान्यताएँ –** पारंपरिक मान्यताएँ महिलाओं की भूमिका को सीमित करती हैं।
4. **परिवार का प्रकार –** संयुक्त परिवारों में महिलाओं की भूमिका सीमित होती है, जबकि एकल परिवारों में अधिक होती है।

शोध अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख परिणाम प्राप्त हुए:

1. महिलाएँ पारिवारिक संसाधन प्रबंधन की मुख्य धुरी हैं।
2. समय एवं धन प्रबंधन में महिलाओं की दक्षता उच्च पाई गई।
3. शहरी महिलाएँ ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा अधिक संसाधन–सजग हैं।
4. शिक्षा महिलाओं की निर्णय–निर्माण क्षमता को सुदृढ़ बनाती है।
5. सामाजिक मान्यताएँ महिलाओं की भूमिका को सीमित करती हैं।

शोध की सीमाएँ:

1. अध्ययन का क्षेत्र केवल सतना जिला तक सीमित है।
2. नमूना आकार सीमित होने के कारण सामान्यीकरण सीमित है।
3. आत्म–रिपोर्टिंग के कारण पक्षपात की संभावना है।

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकलता है कि पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण,

बहुआयामी एवं निर्णायक है। महिलाएँ न केवल घरेलू कार्यों का संचालन करती हैं, बल्कि पारिवारिक संसाधनोंकृजैसे समय, धन, ऊर्जा एवं मानव संसाधनकृके नियोजन, संगठन और नियंत्रण में भी केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह भूमिका पारिवारिक स्थिरता, सामाजिक संतुलन और आर्थिक सुरक्षा का आधार है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि महिलाओं का योगदान प्राय: अदृश्य रहता है और सामाजिक–आर्थिक ढांचे में उसे पर्याप्त मान्यता नहीं मिलती। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ सीमित संसाधनों के बावजूद पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में महिलाएँ शिक्षा, तकनीक और सूचना की सहायता से संसाधन प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाती हैं। यह अंतर सामाजिक विकास और अवसरों की असमानता को दर्शाता है।

शिक्षा महिलाओं की निर्णय–निर्माण क्षमता को सुदृढ़ बनाती है और उन्हें पारिवारिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग हेतु सक्षम बनाती है। कार्यरत महिलाएँ पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में अधिक आत्मनिर्भर एवं निर्णायक भूमिका निभाती हैं। इसके विपरीत, पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ और लैंगिक असमानताएँ महिलाओं की पूर्ण सहभागिता में बाधा उत्पन्न करती हैं।

अत: यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पारिवारिक संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका केवल घरेलू दायित्व तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक–आर्थिक विकास का एक सशक्त माध्यम है।

नीतिगत निहितार्थ:

1. महिलाओं के संसाधन प्रबंधन कौशल को राष्ट्रीय विकास नीतियों में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
2. महिला–केंद्रित वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
3. गृह विज्ञान शिक्षा को नीति–निर्माण में अधिक महत्व दिया जाना चाहिए।
4. ग्रामीण महिलाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए।

सुझाव – प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

1. महिलाओं को वित्तीय साक्षरता एवं बजट प्रबंधन प्रशिक्षण दिया जाए।
2. महिलाओं की निर्णय–निर्माण प्रक्रिया में समान सहभागिता सुनिश्चित की जाए।
3. गृह प्रबंधन शिक्षा को विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर अनिवार्य किया जाए।
4. सरकारी योजनाओं की जानकारी महिलाओं तक सरल भाषा में पहुँचाई जाए।
5. महिलाओं के अदृश्य श्रम को सामाजिक एवं आर्थिक मान्यता दी जाए।
6. स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जाए।

भविष्य के शोध हेतु सुझाव:

1. यह अध्ययन अन्य जिलों एवं राज्यों में विस्तारित किया जा सकता है।
2. शहरी कार्यरत महिलाओं पर विशेष अध्ययन किया जा सकता है।
3. पारिवारिक संसाधन प्रबंधन और महिला सशक्तिकरण के बीच संबंध पर शोध किया जा सकता है।
4. अंतर–पीढ़ी अध्ययन द्वारा भूमिका परिवर्तन का विश्लेषण किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. Agarwal, B. (2018). Gender equality and household management. World Development, 105, 24–38.
2. Desai, N. (2019). Women in Indian society. Mumbai: Oxford University Press.
3. Devi, K. (2021). Economic contribution of women in families. International Journal of Sociology, 6(2), 55–63.
4. Government of India. (2022). Women empowerment policies. New Delhi: Ministry of Women and Child Development.
5. Kaur, P. (2020). Work-life balance of women. Asian Journal of Social Research, 12(1), 66–74.
6. Kumar, A., & Singh, P. (2019). Rural women and household resources. Sociological Bulletin, 68(1), 72–89.
7. Mishra, R. (2021). Family structure and women's role. Indian Sociological Review, 4(2), 88–96.
8. Patel, M. (2020). Education and women's decision making. Journal of Social Sciences, 15(3), 101–112.
9. Rao, V. (2018). Gender and family economics. New Delhi: Sage Publications.
10. Sen, A. (2017). Development as freedom. New Delhi: Oxford University Press.
11. Sharma, R. (2017). Family resource management. New Delhi: Pearson Education.
12. UNDP. (2019). Human development report. New York: United Nations Development Programme.
13. UNICEF. (2020). Women and family wellbeing. New York: UNICEF.
14. Verma, S. (2018). Time management skills among women. Indian Journal of Home Science, 30(2), 45–53.
15. World Bank. (2021). Gender and development. Washington, DC: World Bank.

****